बाल मन पर अनुभव-आधारित अधिगम का प्रभाव
एक साहित्यिक प्रसंग

अमरीन अली*

हम सदैव बच्चों के बहुमुखी विकास के लिए अनेक प्रयास करते हैं। क्योंकि बच्चा सर्वप्रथम अपने आस-पास के परिवेश से ही सीखना आरंभ करता है। जिसकी शुरुआत अपने परिवार या घर से होती है, क्योंकि उसका शुरुआती समय परिवार के साथ ही व्यतीत होता है। "3 वर्ष की आयु तक, घर का वातावरण ही बच्चे के लिए, पर्याप्त पोषण, अच्छी स्वास्थ्य की आदतें, ज़िम्मेदारीपूर्वक देखभाल, सुरक्षा और संरक्षण तथा बचपन के आरंभिक दिनों में सीखने के लिए प्रोत्साहन का एकमात्र प्रदाता होता है। (बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, पृष्ठ 15)।" जब वह धीरे-धीरे बड़ा होता है, तो उसके संपर्क में अन्य लोग आते हैं। इसी कड़ी में वह विद्यालय जाकर औपचारिक रूप से सीखना प्रारंभ करता है। इस सीखने की प्रक्रिया में वह अधिगम-शिक्षण के दौरान अपने परिवार द्वारा एवं अपने निकटतम परिवेश में सीखा हुआ पूर्व ज्ञान सीखने की बुनियाद रखता है। इस लेख में इन्हीं सरोकारों को शामिल करते हुए माता-पिता एवं अभिभावकों की सोच तथा व्यवहार का बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास पर प्रभाव को हिंदी साहित्य की कहानियों, उपन्यासों आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, बताया गया है कि साहित्य बच्चों के मनोविज्ञान को समझने एवं उनकी समस्याओं के समाधान ढूँढ़ने का सार्थक आधार है।

बच्चा अपने परिवार में माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी, नाना-नानी आदि से बहुत कुछ सीखता है और परिवार के ये सदस्य बच्चों को भाषा एवं मूल्य सिखाते हैं। वह उनको बात करते देखता-सुनता है, इससे उसे भाषा का ज्ञान होता है। वह उस भाषा को स्वतः ही सीख जाता है। ये उसकी मातृभाषा होती है, जिसमें उसे सर्वप्रथम अपने आस-पास के पर्यावरण एवं वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त होता है। उसकी भाषा का विकास इसी प्रकार से आरंभ होता है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* भी मातृभाषा में शिक्षा देने की बात करती है, "जहाँ तक संभव हो, कम से कम कक्षा 5 तक लेकिन बेहतर यह होगा कि यह कक्षा 8 और उससे आगे तक भी हो, शिक्षा का माध्यम, घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी। ...यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास जल्दी किए जाएँगे कि बच्चे द्वारा बोली जाने वाली भाषा और शिक्षण के माध्यम के बीच यदि कोई अंतराल मौजूद हो तो उसे समाप्त किया जा सके"

**कनिष्ठ परियोजना सहायक*, अध्यापक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली 110006

(राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृष्ठ 19)। भाषा के माध्यम से ही बच्चा नैतिक मूल्यों को सीखता है।

परिवार में उसे यह बताया जाता है कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं। इसके साथ ही, कहानियों के माध्यम से उन्हें बुनियादी स्तर का ज्ञान प्राप्त होता है। यह कहानियाँ मूल्यों पर आधारित होती हैं जिससे उनका चारित्रिक निर्माण होता है। इसके साथ ही, ये कहानियाँ बच्चों में सूझबूझ एवं तार्किकता का विकास करती हैं। इन कहानियों के माध्यम से बच्चे बुनियादी स्तर का ज्ञान एवं संख्या ज्ञान भी सीखते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बच्चों को बुनियादी स्तर पर साक्षरता एवं संख्या ज्ञान प्रदान करने पर बल देती है। "बच्चों को पंचतंत्र की मूल कहानियों, जातक, हितोपदेश और अन्य मज़ेदार दंतकथाओं और भारतीय परंपरा से जुड़ी प्रेरक कहानियों को पढ़ने और सीखने का अवसर मिलेगा और वैश्विक साहित्य पर उनके प्रभावों के बारे में भी वे जानेंगे" (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*, पृष्ठ 24–25)। बुनियादी स्तर पर कहानियों एवं खेल के माध्यम से सीखना एवं स्वयं करके सीखना अनुभव-आधारित शिक्षणशास्त्र का सिद्धांत है। खेल के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करना एक विशेष अधिगम-शिक्षण प्रक्रिया है। इसमें बच्चे मनोरंजन के साथ खेल-खेल में ही बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। *विद्या प्रवेश* में इसी पर आधारित शिक्षणशास्त्र को महत्व दिया गया है, "खेल बच्चों के समग्र विकास में मदद करता है और उनकी प्रगति को दर्शाता है। सीखने के अवसरों में बच्चों को पर्यावरण के साथ और एक-दूसरे के साथ जुड़ने के लिए एक माध्यम के रूप में खेल पर ज़ोर देना चाहिए तथा इस प्रक्रिया में अपने स्वयं के ज्ञान को अर्जित करने की प्रक्रिया को बढ़ावा देना चाहिए (*विद्या प्रवेश 2022*, पृष्ठ 6–7)।" इस प्रकार बच्चों के शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक विकास एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास में भाषायी ज्ञान व समझ का महत्वपूर्ण योगदान होता है, जिसमें कहानियों का विशेष योगदान होता है। हिंदी साहित्य में समाज का वास्तविक रूप दिखाई देता है। हिंदी कथा साहित्य समाज की विभिन्न सामाजिक तथा नैतिक बुराइयों का विरोध करता है और बेहतर समाज निर्माण को बढ़ावा देता है। हिंदी में ऐसी कहानियों एवं उपन्यासों की रचना हुई है, जो लोगों को देश के बेहतर नागरिक बनाने में मार्गदर्शक का कार्य करते हैं। इसी प्रकार, लोगों को शिक्षा प्रदान करने एवं शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूक करने का कार्य भी साहित्य करता है। यह समाज को बताता है कि समाज को कैसा होना चाहिए, जिसमें सबका विकास संभव हो सके। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है।

नैतिक मूल्य व्यक्ति के जीवन की आधारशिला हैं। प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' इसी प्रकार की कहानी है, जो बच्चों को खेल-खेल में ज्ञान प्रदान करने, समूह में सीखने, प्रेम; मित्रता; एकता जैसे मूल्यों, जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, आत्मविश्वास आदि का विकास करने पर आधारित है। यह कहानी बच्चों में तार्किक क्षमता विकसित करने में सहायक है। प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि परिवार के सदस्य जिस प्रकार के मूल्य एवं आदर्शों को अपनाते हैं। उस परिवार के बच्चे भी उन मूल्यों एवं आदर्शों को स्वतः ही अपना लेते हैं। इस कहानी के केंद्र में हामिद नामक एक बच्चे की कथा है, जिसके माता-पिता नहीं हैं।

वह अपनी दादी के साथ रहता है। उसकी दादी उसे बहुत प्रेम करती हैं। इसलिए हामिद भी अपनी दादी को बहुत चाहता है। जिस प्रकार उसकी दादी उसका ध्यान रखती है। वह भी अपनी दादी का ख्याल रखता है। ईद के दिन से कहानी शुरू होती है। जब सब नमाज पढ़ने ईदगाह जाते हैं। हामिद भी नमाज पढ़ने जा रहा है लेकिन उसकी दादी चिंतित हैं। दादी उसे अकेले भेजना नहीं चाहती कि सब बच्चे अपने अब्बा के साथ जाएँगे और वह अकेला जाएगा। लेखक के अनुसार, "वह हामिद को अकेले गाँव से इतना दूर कैसे भेजे। कहीं वह मेले की भीड़ में खो गया, तो वह क्या करेगी? उसके पास जूते भी नहीं हैं। तीन कोस कैसे चलेगा, पैरों में छाले पड़ जाएँगे।" इसी प्रकार हामिद भी अपनी दादी का ख्याल रखता है। वह दादी से कहता है,"तुम डरो मत, मैं मेले से सबसे पहले आ जाऊँगा।"

भारतीय संस्कृति में माता-पिता, अभिभावकों का आदर व सम्मान करना व उनकी सेवा करना, उनसे प्रेमपूर्वक व्यवहार करना, उनके प्रति विनम्र भाव रखना आदि को विशेष महत्व दिया जाता रहा है। प्रत्येक अभिभावक अपने बच्चों को यही संस्कार सिखाते हैं। प्रेमचंद ने इस कहानी की रचना भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में की है, जो गाँव के सांस्कृतिक परिवेश को दर्शाती है। जहाँ भारतीय परंपरा को विरासत के रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे प्रेषित किया जाता रहा है। यह बच्चों में संस्कृति के प्रति लगाव एवं जीवन के प्रति सकारात्मकता को बढ़ावा देता है। प्रेमचंद इस कहानी में मूल्यों को महत्व देते हैं, जो व्यक्ति के जीवन के लिए मूल्यवान होते हैं। इसके माध्यम से वह बताना चाहते हैं कि यदि परिवार के पास धन का अभाव हो, जीवन की मूल आवश्यकताओं को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त धन न हो, तब भी परस्पर प्रेम, स्नेह, आदर, विनम्रता, सेवा आदि मूल्य व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण हैं। हामिद के मन में भी धन के प्रति कोई लालसा नहीं है। वह आर्थिक अभाव में भी प्रसन्न एवं संतुष्ट है। त्यौहार के दिन जब सभी मिठाइयाँ और खिलौने आदि सामान खरीद रहे हैं। वह इन सब को अनदेखा कर खुशी-खुशी ईदगाह जाता है और अपनी दादी के लिए चिमटा लेता है। उसका यह कार्य उसकी जिजीविषा एवं सकारात्मकता का प्रतीक है। वह अपने इस कार्य से पूरी तरह संतुष्ट और खुश होता है। इस कार्य में उसकी दादी के प्रति प्रेम और सेवा की भावना निहित है।

इसी प्रकार यह कहानी खेल-खेल में सीखने पर आधारित है। हामिद और उसके मित्र ईद की नमाज़ पढ़ने ईदगाह जाते हैं। तब हामिद के मित्र नमाज़ पढ़ने के बाद ईदगाह में लगे मेले से मट्टी के बने अलग-अलग खिलौने खरीदते हैं और अपने खिलौने के बारे में एक-दूसरे को बताते हैं— मोहसिन कहता है, "मेरा भिश्ती रोज़ पानी दे जाएगा, साँझ-सबेरे।" महमूद— "और मेरा सिपाही घर का पहरा देगा। कोई चोर आएगा तो फौरन बंदूक से फैर कर देगा। नूरे और मेरा वकील खूब मुकदमा लड़ेगा।" सम्मी— "मेरी धोबिन रोज़ कपड़े धोएगी।" हामिद अपनी दादी के लिए रोटी पकाने का चिमटा खरीदता है। तब उसके मित्र उसका उपहास उड़ाते हैं। उसने काला चिमटा लिया वह भी लोहे का। इससे वह क्या खेल खेलेगा? मोहसिन ने कहा, "हामिद का चिमटा पानी नहीं भर सकता है।"

यह सुनते ही हामिद ने अपने चिमटे को सीधा खड़ा किया और कहा, "मेरा चिमटा भिश्ती को एक बार डाँटे तो वह दौड़ा हुआ उसके लिए पानी लाकर देगा।"

ऐसे एक-एक करके जब सबके खिलौने हामिद के चिमटे से हार गए तो मोहसिन ने फिर से कहा, "तुम्हारे चिमटे का मुँह हर रोज़ आग से जलेगा।"

इस बात को सुनते ही हामिद ने कहा, "आग में तो बहादुर ही कूदते हैं। तुम लोगों के खिलौने पूरे दिन घर में रहेंगे और मेरा बहादुर चिमटा हर दिन आग में कूदेगा।"

इस प्रकार बच्चों को इन खिलौनों के माध्यम से चर्चा करने व सीखने का अवसर मिलता है। इसके साथ ही, वे तर्क करना सीख जाते हैं। जहाँ ये सब मित्र हामिद को अपने समूह में एक सदस्य के रूप में नहीं अपनाते, वहीं इस चिमटे पर हुई चर्चा एवं हामिद के तर्कों को देखते हुए, उसे अपने समूह में प्रसन्नतापूर्वक शामिल कर लेते हैं। उसका चिमटा सबसे बेहतर है, यह जानकर हामिद भी बहुत प्रसन्न होता है। एक चिमटे को लेकर सभी बच्चों के विचार प्रकट होते हैं और चिमटे के कार्य को देखते हुए उनके ये विचार परिवर्तित भी हो जाते हैं। अब सबकी नज़र में यह चिमटा बहुत उपयोगी वस्तु बन जाता है। चिमटे का उपयोग एवं वह किस धातु से बना है, इसका ज्ञान भी इन बच्चों को हो जाता है। खेल-खेल में ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया यहाँ चरितार्थ होती है। खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र में खिलौनों के माध्यम से शिक्षा दी जाती है। इसमें "खिलौने बच्चों में मूल्यों तथा कौशलों को विकसित करते हैं। साझा करना, सहानुभूति, प्रेम, देखभाल आदि और निर्णय लेना, टीम का निर्माण, समस्या-समाधान आदि मूल्यों एवं कौशलों का विकास बच्चों में खिलौनों एवं खेलों के माध्यम से होते हैं" (*टॉय बेस्ड पेडागॉजी,* 2022, पृष्ठ 2)।

बच्चों को इसके माध्यम से एक-दूसरे से जुड़ने का अवसर मिलता है। एक-दूसरे के साथ चीज़ों को साझा करना भी सीखते हैं। जैसे "थोड़ा आगे जाने पर महमूद को भूख लगी तो उसने खाने के लिए अपने अब्बा से केले लिए। इस बार उसने हामिद को भी केला खाने के लिए दिया। ये केला हामिद को उसके चिमटे की वजह से मिला था।"

इस प्रकार अनुभव-आधारित एवं खेल-आधारित शिक्षणशास्त्र बच्चों को सहज रूप से परिवार के साथ एवं मित्रों के साथ, पर्यावरण से सामंजस्य स्थापित करने तथा सीखने में मदद करता है। बच्चा उनके अनुभवों तथा उनके द्वारा किए जाने वाले व्यवहारों के अवलोकन के माध्यम से सीखता है। परिवार के सदस्य बच्चों को सही और गलत में अंतर सिखाते हैं, अपनी चीज़ों की साफ़-सफ़ाई करना एवं व्यवस्थित कर जमाना, जल्दी उठना, प्रार्थना करना, रोज़ नहाना, बड़ों का आदर करना, सबसे प्रेम करना, पेड़-पौधों को पानी देना, कूड़ा न फैलाना आदि जैसे कार्य वे अपने परिवार में रहकर ही सीख जाते हैं, क्योंकि उनके बड़े-बुज़ुर्ग उनके सामने इसी प्रकार के कार्य करते हैं, इसलिए वे भी इन कार्यों को जल्द ही व्यावहारिक रूप से अपना लेते हैं। बच्चों की औपचारिक शिक्षा आरंभ करने के लिए विद्यालयों की स्थापना की गई, ताकि बच्चे ज्ञान प्राप्त कर स्वयं का विकास कर समाज के विकास को बढ़ाएँ, जिससे सभी प्रकार की असमानताएँ दूर हो सकें। बच्चों के सीखने के समय का आरंभ उसके परिवार से ही हो जाता है। इसलिए वह अच्छा-बुरा जो भी सीखता है, अपने परिवार से ही सीखता है। उसकी प्रथम पाठशाला उसका परिवार होता है। "इस आयु वर्ग के बच्चे

अपने अनुभवों के आधार पर आसपास की दुनिया के बारे में तेज़ी से अवधारणाएँ विकसित कर रहे होते हैं। समझ के साथ सीखने और औपचारिक शिक्षा में अवधारणाओं के विकास के लिए अनुभव और समझ के विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए" (*बुनियादी स्तर हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022,* पृष्ठ 248)।

हिंदी में अनेक महत्वपूर्ण उपन्यास लिखे गए हैं, जिनमें मन्नू भंडारी का *आपका बंटी* उपन्यास बहुत चर्चित है। इसका मुख्य कारण इसकी कथावस्तु है। इसमें एक छोटे बच्चे 'बंटी' की कथा है। वह अपनी माँ के साथ रहता है। उसके माता-पिता अलग-अलग हो गए हैं, वे अलग क्यों हो गए यह बात उसकी समझ से परे है। वह नहीं जानता कि उसके माता-पिता का तलाक होने वाला है। जब तक उसे इसका आभास नहीं होता तब तक वह मन-मौजी, खेलने-कूदने एवं शरारतें करने वाला एक सामान्य-सा बालक है। वह अपनी माँ के बालों में लगाने के लिए बगीचे से फूल तोड़ता है और खुद अपने हाथों से माँ के बालों में लगाता है। रोज़ माली के साथ बगीचे में बागवानी करता है। उसे बगीचे में लगे सभी पेड़-पौधों के बारे में पूर्ण जानकारी होती है। कब-किस में कितना पानी देना है, कब फूल आएँगे और कब फल, उसे सबकी जानकारी होती है। वह जिज्ञासाओं से युक्त अपने चारों ओर के वातावरण के प्रति सजग रहता है। सारी जिज्ञासाओं का उत्तर उसकी माँ से उसे मिलता है। उसकी माँ उसकी मित्र भी है, जो उसे दिनभर सिखाती रहती है। वह अपनी पुस्तकों तथा कापियों को सुंदर एवं सजा कर रखता है। वह घर में काम करने वाली फूफी से कहानियाँ सुनता है और कल्पना करता है। वह हर प्रकार से सकारात्मक सोच रखने वाला बालक है। किंतु उसकी यह सकारात्मकता अंत में नकारात्मकता में परिवर्तित हो जाती है क्योंकि उसके पिता ने दूसरी शादी कर ली है तथा अब उसकी माँ भी दूसरा विवाह करना चाहती है। इन सबके बीच बंटी की माँ और पिता ने बंटी के बारे में क्यों नहीं सोचा? यह एक बड़ा प्रश्न है। दोनों अपने जीवन के बारे में सोचते हैं। उस मासूम बंटी को अनदेखा कर देते हैं। जब बंटी का सामना अपने सौतेले माता-पिता से होता है, तब उसका वजूद अंदर से टूट जाता है। पूरी कथा उसकी अंतः वेदना को उजागर करती है। उसे न चाहते हुए भी सौतेले माता-पिता को अपनाना पड़ता है। बंटी इस वातावरण में अपने आपको असहज एवं अनुपयुक्त वस्तु के समान अनुभव करने लगता है, जिसकी किसी को परवाह नहीं होती। इसका प्रभाव यह होता है कि वह अपने सौतेले माता-पिता के साथ समायोजित नहीं कर पाता और अंत में उसे हॉस्टल भेज दिया जाता है।

यह कथा बच्चों के मनोविज्ञान को न समझने के परिणामों को दर्शाती है, जिस कारण बच्चों का विकास बाधित होता है। जिन परिवारों में बच्चों को उपेक्षापूर्ण वातावरण मिलता है। वहाँ बच्चे जिद्दी और गुस्से वाले होते हैं। नकारात्मकता इतनी बढ़ जाती है कि जीवन एवं समाज के प्रति भी वे नकारात्मक सोच रखते हैं। इस उपन्यास में बंटी अपने माता-पिता के साथ सहज नहीं रह पाता है— "बंटी के मन का दु:ख और गुस्सा धीरे-धीरे डर में बदलने लगा" (मन्नू भंडारी, 2017. पृष्ठ 135)। इस घटना का उसके मस्तिष्क एवं व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने लगता है। वह धीरे-धीरे मितभाषी होने लगता है। विद्यालय से मिले गृहकार्य

नहीं करता है। अब बागवानी में भी उसकी कोई रुचि नहीं रही। वह खुलकर अपने माता-पिता से कुछ भी नहीं कहता है। लेखिका के अनुसार, "बंटी के बाहर का ही नहीं, भीतर का भी जैसे सबकुछ थम गया। थम नहीं गया जैसे सबकुछ सहम गया। ज़िद, गुस्सा, रोना-चिल्लाना" (मन्नू भंडारी, 2017, पृष्ठ 163)। जब बच्चों को परिवार में उचित देखभाल एवं प्यार न मिले तो बच्चे दूसरों के प्रति भी ऐसे ही व्यवहार करना सीख जाते हैं। घर में उनकी बातों एवं इच्छाओं को अनदेखा किया जाए तो बच्चों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उनकी अधिगम प्रक्रिया भी इन कारणों से बाधित होती है। बंटी चाहता है कि उसके माता-पिता साथ रहें, किंतु ऐसा संभव नहीं होता। एक अन्य प्रसंग में बंटी के मासूम विचारों को दर्शाया गया है, "एक बात वह ज़रूर पूछेगा कि क्या तलाकवाली कुट्टी में कभी अब्बा नहीं हो सकती? अगर पापा भी साथ रहने लगें तो कितना मज़ा आए" (*मन्नू भंडारी*, 2017, पृष्ठ 112)।

संबंध विच्छेद की समस्या एक बच्चे के जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी बन जाती है। ऐसे परिवारों में रहने वाले बच्चों की मानसिक स्थिति प्रभावित होती है। ऐसे बच्चे विद्यालयों में अन्य बच्चों के साथ तादातम्य स्थापित नहीं कर पाते। वह कक्षा में सबसे अलग रहते हैं। सबके साथ आसानी से घुल-मिल नहीं पाते, जिससे उनका शारीरिक एवं मानसिक विकास भी बाधित होता है और वे सीखने के प्रति उदासीन रहते हैं और वे अंतर्मुखी बन जाते हैं। उनमें सृजनात्मकता का भी अभाव होता है। वे उन मूल्यों के प्रति भी उदासीन हो जाते हैं जो एक संगठित परिवार में विद्यमान होते हैं।

इसी प्रकार एक अन्य कहानी 'पाज़ेब' है, जिसके रचयिता जैनेंद्र कुमार हैं। इस कहानी में मध्यम वर्ग के परिवारों में व्याप्त मानवीय संवेदना की अपेक्षा धन को अधिक महत्व देने की प्रवृत्ति एवं मध्यम वर्ग के परिवारों के पूर्वाग्रहों को दर्शाया गया है। मध्यम वर्ग के परिवारों के वैचारिक स्तर का उनके बच्चों के विकास पर बहुत प्रभाव पड़ता है। इस कहानी में आशुतोष नामक एक छोटा बालक है, जिसकी एक छोटी बहन है। उसके पिता उसकी बहन के लिए चाँदी की पाज़ेब लाते हैं। लेकिन एक पैर की पाज़ेब कहीं गुम हो जाती है। माता-पिता इसका दोषी आशुतोष को समझते हैं। पिता आशुतोष से बार-बार पूछते हैं कि एक पाज़ेब का क्या किया, कहाँ बेचा उसे, उसे बेचकर तुमने कितने पैसे लिए। इस प्रकार के अनेक प्रश्नों से उसे जूझना पड़ता है। कहानी के इस प्रसंग में दर्शाया गया है कि आशुतोष के बालमन पर इन प्रश्नों का क्या प्रभाव पड़ता है?

"सवेरे बुलाकर मैंने गंभीरता से उससे पूछा कि क्यों बेटा, एक पाज़ेब नहीं मिल रही है, तुमने तो नहीं देखी?

वह गुम हो गया, जैसे नाराज़ हो, उसने सिर हिलाया कि उसने नहीं ली, पर मुँह नहीं खोला।

मैंने कहा कि देखो बेटे, ली हो तो कोई बात नहीं, सच बता देना चाहिए।

उसका मुँह और भी फूल आया और वह गुम-सुम बैठा रहा" (जैनेन्द्र कुमार, 1952)।

यह उद्धरण परिवार की उस मनोवृत्ति को दर्शाती है जहाँ लोगों में यह धारणा होती है कि वे आदर्शों एवं मूल्यों के प्रति समर्पित हैं। वे बच्चों के लिए एक आदर्श जीवन शैली को प्रस्तुत करते हैं। आशुतोष के

पिता यह मानते हैं कि बच्चों के साथ किसी भी मामले में ज़बरदस्ती एवं कठोरतापूर्ण व्यवहार नहीं करना चाहिए। उनका मन बहुत कोमल होता है। उनसे प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए, यह उनके व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। किंतु धीरे-धीरे वह अपने क्रोध पर नियंत्रण नहीं रख पाते और आशुतोष के साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार करने लगते हैं।

इसी प्रकार एक अन्य प्रसंग में मध्यम वर्ग की संकुचित मानसिकता का चित्रण किया गया है। इसमें आशुतोष को उस कार्य को स्वीकारने के लिए बाध्य किया जा रहा था, जो उसने किया ही नहीं था।

"मैंने बुलाकर कहा, "अच्छा सुनो, देखो, मेरी तरफ़ देखो, यह बताओ कि पाज़ेब तुमने छुन्नू को दी है न?"

वह कुछ देर कुछ नहीं बोला, उसके चेहरे पर रंग आया और गया, मैं एक-एक छाया ताड़ना चाहता था।

मैंने आश्वासन देते हुए कहा कि डरने की कोई बात नहीं, हाँ, हाँ, बोलो डरो नहीं, ठीक बताओ, बेटे! कैसा हमारा सच्चा बेटा है!

मानो बड़ी कठिनाई के बाद उसने अपना सिर हिलाया।

मैंने बहुत खुश होकर कहा कि दी है न छुन्नू को?

उसने सिर हिला दिया।

अत्यंत सांत्वना के स्वर में स्नेहपूर्वक मैंने कहा कि मुँह से बोलो, छुन्नू को दी है?

उसने कहा, "हाँ-आँ"

"इस बार भी वह नहीं बोला तो मैंने कान पकड़कर उसके कान खींच लिए, वह बिना आँसू लाए गुम-सुम खड़ा रहा।

"अब भी नहीं बोलोगे?"

वह डर के मारे पीला हो आया, लेकिन बोल नहीं सका, मैंने ज़ोर से बुलाया "बंसी यहाँ आओ, इनको ले जाकर कोठरी में बंद कर दो।"

बिना अपराध किए सज़ा मिलना एक बच्चे के मन पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। जिस कारण माता-पिता के उकसाने पर वह झूठ बोलना आरंभ कर देता है, ताकि उसे इस समस्या से मुक्ति मिल जाए। इस झूठ के बाद दूसरा झूठ और उस पर माता-पिता का विश्वास करना बच्चे को यह सिखाता है कि अपनी जान बचाने, समस्या से बाहर निकलने आदि के लिए झूठ बोलना पड़े तो बोल देना चाहिए। माता-पिता या अभिभावकों द्वारा बच्चों से बार-बार एक ही बात के बारे में पूछने से उनमें झूठ बोलने की आदत बन जाती है। बच्चे फिर बिना झिझक के सामान्य रूप से झूठ बोलने लग जाते हैं।

बच्चे जब अपने घर के भीतर लड़ाई-झगड़ा, संबंध-विच्छेद, मार-पीट, जेंडर भेद आदि देखते हैं तो वे भी उसी मानसिकता को अपनाने लगते हैं। उनका व्यवहार एवं विचार भी उन्हीं के अनुरूप ढलने लगते हैं। वे मूल्यों के प्रति उदासीन रहते हैं। यदि बच्चे को अपने घर में सबसे प्यार-विश्वास, उदार मानसिकता तथा सीखने का अच्छा माहौल मिलता है तो वे अच्छे व्यवहार व मूल्यों को सीखते हैं। उनके विचारों में उदारता होती है। साथ ही, व्यावहारिक रूप से सकारात्मक भी होते हैं। इसका उदाहरण प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' है। दादी हामिद से बहुत प्यार करती हैं। इसलिए वह यह सहन नहीं कर सकती कि उसे कोई दुख पहुँचे। उसकी दादी मिठाई खाने और खिलौने खरीदने के लिए उसे कुछ पैसे देती हैं। हामिद अपने दोस्तों

के साथ ईदगाह जाता है। नमाज़ पढ़ने के बाद वह बाज़ार में सभी दुकानों को देखता है, लेकिन वह न तो कोई मिठाई लेता है और न ही खिलौने, वह बाज़ार से चिमटा लेता है। अपनी दादी अम्माँ को रोटी पकाते हुए वह रोज़ देखता था। रोटी बनाने में दादी की उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं। इसलिए इन पैसों से वह चिमटा खरीदता है। घर जाकर दादी पूछती है कि मेले से क्या लिया, तो हामिद कहता है कि उसने मेले से चिमटा लिया है। "इतना सुनते ही बूढ़ी अमीना छाती पिटते हुए रोने लगी। हामिद को कोसने लगी कि कितना बेवकूफ लड़का है ये। दिनभर कुछ खाया-पिया नहीं और मेले में जाकर सारे पैसों से ये चिमटा खरीद कर लाया है। फिर उसने हामिद से गुस्से में पूछा, "मेले में कोई और चीज़ नहीं थी क्या, जो तू लोहे का चिमटा लेकर आया है?"

हामिद ने उदास मन से कहा, "रोटियाँ बनाते हुए तुम्हारी उँगलियाँ जल जाती थीं, इसलिए मैंने यह चिमटा खरीद लिया।"

हामिद की बात सुनकर बूढ़ी अमीना एकदम से चुप हो गई। उसके पास छोटे नादान बच्चे को कहने के लिए कोई शब्द नहीं थे। वह बस हामिद के त्याग और प्यार की भावना देखकर हैरान थी। मन ही मन सोच रही थी कि मेले में न जाने कितने खिलौने रहे होंगे, हज़ार रंग-बिरंगी मिठाइयाँ होंगी, फिर भी इस बच्चे ने अपने बारे में न सोचकर अपनी बूढ़ी दादी का ख्याल किया।"

इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने उस परिवेश का चित्रण किया है, जिसमें अभावों के बाद भी हामिद और उसकी दादी खुशी-खुशी रहते हैं। उनके आपसी स्नेह व प्रेम के कारण उनको अभावों की कोई चिंता नहीं होती और इन कठिन परिस्थितियों में भी दोनों एक-दूसरे की खुशी के बारे में सोचते हैं। जिन परिवारों के लोगों में इस प्रकार की प्रेम भावना, त्याग, आपसी साझेदारी, लगाव होता है, उन परिवारों के बच्चे भी वैसे ही जीवन मूल्यों का अनुभव प्राप्त करते हैं। यह अनुभव उनके जीवन का आधार होते हैं, क्योंकि परिवार में उन्हें जीवन के वास्तविक अनुभवों से जुड़ने के पर्याप्त अवसर मिलते हैं। इन अनुभवों के द्वारा ही उनका नैतिक विकास होता है। जिन परिवारों में लोग झूठ बोलते हैं व झगड़ा करते हैं, उनके बच्चे भी वही आदतें अपनाने लगते हैं।

बच्चों की प्राथमिक पाठशाला उनका घर है। इसलिए माता-पिता एवं अभिभावकों को इन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों के सामने झूठ न बोले, झगड़ा न करें, किसी को अपमानित न करें आदि। उनकी भाषा, व्यवहार एवं विचारों का बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह नकारात्मक प्रवृत्ति विद्यालय में अन्य बच्चों के साथ सहयोग करने, समूह में खेलना, सकारात्मक सोच एवं व्यवहार का परिणाम होती है, जो उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास को भी प्रभावित करती है। इस प्रकार बच्चों के बेहतर विकास के लिए उन्हें सीखने के सुअवसर प्रदान करने चाहिए। उन्हें मूल्यपरक कहानियाँ सुनाकर, खेल-खेल में व खिलौनों से शिक्षा प्रदान करनी चाहिए, जिससे बच्चों में तार्किक क्षमता का विकास हो सके। वे अपने आस-पास के पर्यावरण से सामंजस्य स्थापित कर सीख सकें। रचनात्मक दृष्टि का विकास, चिंतन एवं चर्चा करना सीख सकें। *विद्या प्रवेश* के अनुसार, "विद्यालय बच्चों के घर का माहौल समृद्ध बनाकर बच्चों की पढ़ाई और विकास में सुधार के लिए समुदाय तथा

माता-पिता को संसाधन के रूप में या सहयोगी के रूप में उपयोग करें" (*विद्या प्रवेश* 2022, पृष्ठ 12)।

निष्कर्ष—इस प्रकार साहित्य बच्चों को उचित शिक्षा प्रदान करता है। साहित्य में निहित नैतिक शिक्षा बच्चों के सामाजिक एवं बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक है। इसके माध्यम से खेल-खेल में ही बच्चों को ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। मनोरंजक कथा साहित्य बच्चों में जिज्ञासा, कल्पना एवं तार्किक क्षमता विकसित करती है। यह साहित्य उन्हें सामाजिक परिवेश के प्रति जागरूक भी करता है। उनमें सामाजिक सामंजस्य स्थापित करने में मदद करता है। विद्यालयी स्तर पर इस प्रकार के कथा साहित्य को पढ़ाने से अभिभावकों में भी बच्चों के प्रति उचित व्यवहार करने की समझ विकसित होती है, जो उनके बच्चों की परवरिश में सार्थक भूमिका निभाती है।

अतः माता-पिता के साथ अध्यापकों को भी जीवन मूल्यों एवं कौशल सिखाने वाली प्रेरक कहानियों एवं प्रसंगों को विद्यार्थियों के साथ साझा करना चाहिए। इसमें वास्तविकता या स्थानीय स्तर पर उपलब्ध या घर पर बनाए खिलौनों के माध्यम से विद्यार्थियों के सीखने को रोचक एवं आनंदमय बनाया जा सकता है, जो बच्चों के समग्र विकास में सहायक होगा। साथ ही, अध्यापकों को भी समय-समय पर विविधता से पूर्ण भारतीय साहित्य पढ़ते रहना चाहिए, क्योंकि साहित्य मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रस्तुत करता है। जिससे वे अपनी सीखने-सिखाने के लिए उचित समझ एवं व्यवहार विकसित कर सकें और अनुभव आधारित शिक्षण को और बेहतर कर सकें। जिससे विषय एवं अधिगम-शिक्षण प्रक्रिया को आनंदायक एवं सरल बनाया जा सके।

संदर्भ

भंडारी मन्नू. 2017. *आपका बंटी*, राधा कृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली. 12 जून 2023

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2022. *विद्या प्रवेश— कक्षा 1 के बच्चों के लिए तीन माह के खेल आधारित 'स्कूल तैयारी मॉडयूल' हेतु दिशानिर्देश.* रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली. 24 अगस्त 2023 को https://ncert.nic.in/pdf/VidyaPravesh_Guidelines_Hindi.pdf से प्राप्त हुआ

————. 2022. *बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2022. *टॉय बेस्ड पेडागॉजी.* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. 24 अगस्त 2023 को https://ncert.nic.in/pdf/notice/toy_based_pedagogy.pdf से प्राप्त किया गया।

12 जून 2023 https://www.femina.in/hindi/sahitya/kahani/pajeb-by-jainendra-kumar-5670-1.html को देखा गया।

12 जून 2023 को https://www.momjunction.com/hindi/kahaniya/munshi-premchand-ki-idgah-story/ को देखा गया।